卐 श्री वीतरागाय नमः 卐

विशद

श्री रक्षाबन्धन विधान

माण्डला

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 100 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 100 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 100 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 100 अर्घ्य
पंचम वलय में – 100 अर्घ्य
षष्ठम् वलय में – 100 अर्घ्य
सप्तम् वलय में – 100 अर्घ्य
कुल 700 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति	:	**विशद श्री रक्षाबन्धन विधान**
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम-2014 * प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी
संयोजन	:	ब्र. सोनू दीदी, ब्र. किरण दीदी, ब्र. आरती दीदी, ब्र. उमा दीदी
सम्पर्क सूत्र	:	9829127533, 9953877155
प्राप्ति स्थल	:	1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट मनिहारों का रास्ता, जयपुर फोन : 0141-2319907 (घर) मो. : 9414812008
		2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार ए-107, बुध विहार, अलवर, मो. : 9414016566
		3. विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा), 9812502062, 09416888879
		4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971, 09136248971
मूल्य	:	35/- रु. मात्र

-: अर्थ सौजन्य

सुनील कुमार जैन, अनमोल जैन, वासु जैन

पी-116, गली न. 8, शंकर नगर, गांधी नगर, दिल्ली-110031
मो.: 09211090909, 09210105706

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली फोन नं. : 09811374961, 09818394651

E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

''वात्सल्य का प्रतीक रक्षाबन्धन पर्व''

रक्षाबन्धन पर्व की, महिमा रही महान।
वात्सल्य का पर्व यह, देता है शुभ ज्ञान।।

सम्यक् ज्ञान पूर्वक दूसरों के अपराध को अपने में वे अपने पास दंड देने की सजा की शक्ति होते हुए भी अपने साथ अपराध करने वाले को क्षमा करना–इस पर क्रोध न करना–अप्रिय घटना को दिल से न लाना–समता भाव पूर्वक अपने ऊपर आए हुए उपसर्गों को सहना करना–अन्तरंग में समता भाव रखना ही उत्तम क्षमा है ऐसे ही उत्तम क्षमा के धारियों की एक प्रसिद्ध घटना का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है। हस्तिनापुर में आज से लगभग 12 लाख वर्ष पूर्व श्री अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों का उपसर्ग दूर हुआ था। श्री विष्णु कुमार महामुनि ने विक्रिया ऋद्धि के प्रभाव से उज्जयिनी से आकर बलि आदि मंत्रियों के द्वारा किये गये उपसर्ग को दूर कर मुनियों की रक्षा की थी वह तिथि ''श्रावण शुक्ला पूर्णिमा थी'' तभी से आज तक यह तिथि 'रक्षाबन्धन' पर्व के नाम से सारे भारत में विख्यात है। भले ही आज यह पर्व मात्र भाई–बहन के पर्व के रूप में प्रसिद्ध है, फिर भी गुरुओं की रक्षा ही इसका मुख्य उद्देश्य है। व्रत तिथि–श्रावण शुक्ला 13 से पूर्णिमा तक 3 दिन यह व्रत करना चाहिए। त्रयोदशी को एकाशन करके चतुर्दशी का उपवास करे।

पुन: श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन श्री अकंपनाचार्य और विष्णु कुमार महामुनियों की पूजा करके साधुओं को आहार दान देकर स्वयं खीर आदि का भोजन लेकर एकाशन करें अर्थात् एक बार भोजन करें एवं धर्म ध्वज स्तंभ में रक्षा सूत्र बाँधे तथा साधर्मियों की एवं धर्मायतन की रक्षा हेतु रक्षा सूत्र बाँधे। इस प्रकार यह व्रत सात वर्ष तक करके यथाशक्ति उद्यापन करें। रक्षाबन्धन कथा पढ़े व जाप्य करें।

रक्षाबन्धन पर **परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** द्वारा रचित यह **'श्री रक्षाबन्धन विधान'** अवश्य करें। इस व्रत के प्रभाव से अनेक प्रकार की दुर्घटना, रेल, मोटर आदि के एक्सीडेंट आदि का निवारण होगा, अकाल मृत्यु टलेगी। अनेक प्रकार के कष्ट दूर होंगे और सब प्रकार से सुख, शांति, यश, सम्पत्ति, संतति आदि की वृद्धि होगी। यदि आप व्रत नहीं कर सकते तो भी रक्षा पर्व पर विष्णु कुमार अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों की पूजा व यह रक्षाबन्धन विधान कर उन 700 मुनियों को अर्घ्य समर्पित कर अथाह पुण्य का अर्जन तो कर ही सकते है।

पुनः वर्तमान के सर्वाधिक विधान रचयिता गुरुवर 108 श्री विशद सागर जी महाराज के श्री चरणों में त्रिभक्ति पूर्वक नमोस्तु एवं भावना भाते है कि आगे भी इसी प्रकार आप अपने उपयोग को जिनवाणी की सेवा में संलग्न करते हुए कालान्तर में स्वर्ग और मोक्ष के उत्तराधिकारी बने।

रक्षाबन्धन पर्व मनाकर वात्सल्य अपनाना है।
सत्य अहिंसा परमो धर्मः जग को सूत्र सुनाना है।।
विशद हृदय में प्राणि मात्र से निज सम्बन्ध बनाना है।
महावीर के सन्देशों को घर घर में पहुँचाना है।।

–मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

वर्षायोग 2014
तिजारा

रक्षाबन्धन स्तवन

दोहा– श्री अकम्पनाचार्य जी, मुनिवर विष्णु कुमार।
के निमित्त वात्सल्य का, चला श्रेष्ठ त्योहार।।

(ज्ञानोदय छन्द)

देव शास्त्र गुरु पूज्य लोक में, जैनागम जिन धर्म महान।
जिन चैत्यालय चैत्य हमारे, जिनका हम करते गुणगान।।
भरतैरावत में त्रैकालिक, तीर्थंकर हैं गुण की खान।
शाश्वत रहें विदेह क्षेत्र में, प्राप्त करें सब पद निर्वाण।।1।।
लोकालोक के मध्य में भाई, जम्बूद्वीप है मंगलकार।
जम्बू वृक्ष के कारण जिसका, नाम पड़ा है अतिशयकार।।
जिसके भरत क्षेत्र में पावन, आर्य खण्ड में भारत देश।
नगर हस्तिनापुर है जिसमें, जिसकी महिमा रही विशेष।।2।।
सप्त शतक मुनि संघ में लेकर, श्री अकम्पनाचार्य मुनीश।
पद विहार करके आए थे, जिनके चरण झुकाएँ शीश।।
पूर्व कर्म का फल यह मानें, जिन पर हुआ घोर उपसर्ग।
सहन किए सब समता धारी, पाने चले सन्त अपवर्ग।।3।।
पद्म राय राजा के आगे, बलि आदिक मंत्री थे चार।
माँगे जो वरदान कपट से, किया पूर्व में था उपकार।।
पद्म राय ने निश्चल होके, दिया मंत्रियों को वरदान।
राज्य चलाओ सात दिनों तक, किया राज्य में यह ऐलान।।4।।
चारों ओर से अग्नि जलाकर, किये वहाँ पर कुत्सित यज्ञ।
सहन किए उपसर्ग सर्व मुनि, ध्यान लगाए जो आत्मज्ञ।।
क्षुल्लक जी ने हाल सुनाया, विष्णु कुमार मुनी के पास।
ब्राह्मण भेष धारकर मुनिवर, किए पूर्ण उपसर्ग विनाश।।5।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि फिर, करने को निकले आहार।
रक्षा बन्धन पर्व तभी से, लोग मनाए शुभ त्योहार।।
वात्सल्य का पर्व मनाते, प्राणी होके भाव विभोर।
भव्य जीव सब हर्ष मनाए, खुशियाँ छाई चारों ओर।।6।।

(इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री विष्णु कुमार महामुनि पूजा

स्थापना

नगर हस्तिनापुर के स्वामी, महापद्म था जिनका नाम।
विष्णु कुमार पुत्र जिनके मुनि, जिनके चरणों विशद प्रणाम॥
दया क्षमा समता के धारी, करने वाले धर्म प्रचार।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, किया जगत् में मंगलकार।
दोहा– राही मुक्ती मार्ग के, तारण तरण जहाज।
आह्वानन् करते हृदय, आओ हे मुनिराज!॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पाइत्ता छन्द)

यह निर्मल जल भर लाए, त्रय रोग नशाने आए।
मुनि विष्णु कुमार कहाए, करुणा की धार बहाए॥1॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन सुरभित ये लाए, भव ताप नशाने आए।
मुनि विष्णु कुमार कहाए, करुणा की धार बहाए॥2॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल धुवाए, अक्षय पद पाने आए।
मुनि विष्णु कुमार कहाए, करुणा की धार बहाए॥3॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प मँगाएँ, हम काम रोग विनसाएँ।
मुनि विष्णु कुमार कहाए, करुणा की धार बहाए॥4॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य बनाए, हम क्षुधा नसाने आए।
मुनि विष्णु कुमार कहाए, करुणा की धार बहाए॥5॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के ये दीप जलाए, हम मोह नशाने आए।
मुनि विष्णु कुमार कहाए, करुणा की धार बहाए॥6॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
मुनि विष्णु कुमार कहाए, करुणा की धार बहाए॥7॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ।
मुनि विष्णु कुमार कहाए, करुणा की धार बहाए॥8॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
मुनि विष्णु कुमार कहाए, करुणा की धार बहाए॥9॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुने! अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांती धारा से मिले, मन में शांति अपार।
भव्य जीव जिन भक्ति कर, पाएँ भव से पार॥

॥शान्तये शान्तिधारा॥

पुष्पित पुष्पों से भरे, लाए अनुपम थाल।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने सुपद त्रिकाल॥

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार महामुनये नमः

जयमाला

दोहा– विष्णु कुमार मुनिवर किए, करुणा कर उपकार।
जयमाला गाते विशद, जिनकी मंगलकार।।

चौपाई

मुनिवर विष्णु कुमार कहाए, पावन जो संयम अपनाए।
धरणी भूषण पर्वत जानो, किए ध्यान जाके शुभ मानो।।
पुष्पदन्त क्षुल्लक जी आए, गुरुवर का सन्देश सुनाए।
ऋद्धि विक्रिया आपने पाई, जिसकी अब आवश्यकता आई।।
नगर हस्तिनापुर में जानो, श्री अकम्पनाचार्य जी मानो।
सात सौ मुनियों के संग आए, जहाँ बैठकर ध्यान लगाए।।
राजा पद्म राय कहलाए, मंत्री जिसके चार बताए।
बलि प्रहलाद बृहस्पति जानो, और नमुचि जिनके हैं मानो।।
उज्जैनी के रहनेवाले, मुनि के कारण देश निकाले।
मुनि को देख के जो घबड़ाए, राजा से वरदान मँगाए।।
सात दिनों तक राज चलाए, चारों मंत्री यज्ञ रचाए।
मुनियों पर उपसर्ग कराए, मुनिवर समता भाव जगाए।।
विष्णु कुमार मुनी तब आए, बटुक विप्र का भेष बनाए।
बलि आदिक जो राज्य चलाए, उनसे भिक्षा पाने आए।।
तीन पैढ़ भूमि जो पाए, देने का संकल्प कराए।
फिर मुनिवर ऋद्धी प्रगटाए, मेरू गिरि तक पग फैलाए।।
दूजा मानुषोत्तर गिरि धारे, मंत्री तव घबड़ाए सारे।
बलि मंत्री चरणों झुक जाता, पीठ पे अपना पग रखवाता।।
भार सहन बलि ना कर पाया, क्षमादान का शब्द गुँजाया।
झुके चरण में मंत्री सारे, मुनियों का उपसर्ग निवारे।।
घर-घर में तब उत्सव छाया, मुनियों को आहार कराया।
श्रावक सारे खुशी मनाये, कर में रक्षा सूत्र बँधाए।।

श्रावक शुक्ल पूर्णिमा पाए, रक्षाबन्धन पर्व कहाए।
वात्सल्य का पर्व मनेगा, युगों-युगों तक अमर रहेगा।।

(घत्ता छन्द)

श्री मुनिवर ज्ञानी, आतम ध्यानी, दृढ़ श्रद्धानी सुखदानी।
जिनकी शुभ वाणी, शुभ वरदानी, जन जन की है कल्याणी।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– विष्णु कुमार मुनीश पद, जो पूजें धर ध्यान।
'विशद' सौख्य पाके सभी, पावें मोक्ष निधान।।

इत्याशीर्वादः

श्री अकम्पनाचार्य पूजन

स्थापना

श्री अकम्पनाचार्य आदि शुभ, सप्त शतक मुनिवर ज्ञानी।
स्वपर भेद विज्ञान जगाने, वाले थे अतिशय ध्यानी।।
यज्ञ किए मंत्री बलि आदिक, करने को उपसर्ग महान्।
विष्णु कुमार मुनिवर के द्वारा, किया गया उपसर्ग निदान।।
वात्सल्य का पर्व कहाया, धर्म सुरक्षा का त्यौहार।
श्रावक शुक्ल पूर्णिमा के दिन, हुआ जगत में मंगलकार।।
परम दिगम्बर मुद्राधारी, मुनियों का करते गुणगान।
भक्ती से प्रेरित होकर हम, निज उर में करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

हमने अनादि से कर्मों के, बन्धन करके बहु दु:ख सहे।
हम राग द्वेष की परिणति से, तीनों लोको में भटक रहे।।
अब जन्म जरा के नाश हेतु, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोगों की रही कामना, जिससे जग में भ्रमण किया।
भव संताप मिटाने का न, हमने अब तक यतन किया।।
नाश होय संसार ताप मम्, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

विषय कषायों में रत रहकर, निज पद को न पाया है।
क्षण भंगुर, जीवन पाकर के, तीनों लोक भ्रमाया है।।
अक्षय पद पाने को अभिनव, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महामद को पीकर के, जीवन व्यर्थ गवाएँ हैं।
काम बाण से बिद्ध हुए हम, अब तक चेत न पाए हैं।।
काम वासना नाश हेतु यह, पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो काम-बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय भोग की ज्वाला में, सदियों से जलते आए हैं।
आशाएँ पूर्ण न हो पाती, हमने कई जन्म गवाएँ हैं।।

अब क्षुधा रोग के नाश हेतु, अतिशय नैवेद्य चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है घोर तिमिर मिथ्या जग में, जिसमें जग जीव भ्रमाए हैं।
अतिशय प्रकाश का पुञ्ज जीव, अब तक ये समझ न पाए हैं।।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, यह मनहर दीप जलाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणादिक कर्मों ने, इस जग में जाल बिछाया है।
हम फँसे अनादी से उसमें, छुटकारा न मिल पाया है।।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, अग्नी में धूप जलाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप का फल पाकर, हम उसमें रमते आए हैं।
हम भटक रहे हैं निज पद से, न अक्षय फल को पाए हैं।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, चरणों फल सरस चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत है जीव अनादी से, हम अब तक जान न पाए हैं।
तन में चेतन का भाव जगा, उसको अपनाते आए हैं।।
हम पद अनर्घ पाने हेतू, अतिशय यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जलधारा देते यहाँ, भक्ति भाव के साथ।
झुका रहे हम भाव से, चरण कमल में माथ।।

शान्तये शांतिधारा...

करते हैं पुष्पाञ्जलि, लेकर पुष्पित फूल।
गुरु भक्ती की भावना, बनी रहे अनुकूल।।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा– श्री अकम्पनाचार्य के, सप्त शतक मुनि साथ।
पुष्पाञ्जलि को पुष्प ये, लाए अपने हाथ।।

।।अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत।।

प्रथम शतकः

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
प्रथमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वितीयः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
तृतीयः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्थः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षष्ठः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तम्ः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टम्ः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवम्ः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
दशम्ः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकादशः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वादशः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयोदशः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्दशः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचदशः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षोडशः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तदशः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टादशः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवदशः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
विंशतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकविंशतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वाविंशतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयोविंशतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्विंशतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचविंशतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षड्विंशतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तविंशतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टविंशतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवविंशतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकत्रिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वित्रिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्र्यस्त्रिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुस्त्रिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचत्रिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्त्रिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तत्रिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टत्रिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवत्रिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चत्त्वारिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक चत्त्वारिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विचत्त्वारिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिचत्त्वारिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुश्चत्त्वारिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचचत्त्वारिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्चत्त्वारिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त चत्त्वारिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट चत्त्वारिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव चत्त्वारिंशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चाशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकपञ्चाशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विपञ्चाशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिपञ्चाशत्तमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु:पञ्चाशत्तम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चपञ्चाशत्तम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्पञ्चाशत्तम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तपञ्चाशत्तम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टपञ्चाशत्तम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवपञ्चाशत्तम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षष्टितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकषष्टितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विषष्टितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिषष्टितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु:षष्टितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचषष्टितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्षष्टितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तषष्टितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टषष्टितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवषष्टितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ततितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक सप्ततितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विसप्ततितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिसप्ततितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु:सप्ततितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचसप्ततितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्सप्ततितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तसप्ततितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टसप्ततितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवसप्ततितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अशीतितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाशीतितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयशीतितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्र्यशीतितम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरशीतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चाशीतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षडशीतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताशीतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाशीतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाशीतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकनवतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विनवतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिनवतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्नवतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चनवतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्नवतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तनवतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टनवतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवनवतितमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ।।1।।

ॐ ह्रीं प्रथमशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय शतकः

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्र्यधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चाधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षडाधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।109।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
दशाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।110।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकादशाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।111।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वादशाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।112।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयोदशाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।113।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्दशाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।114।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चदशाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।115।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षोडशाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।116।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तदशाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।117।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टादशाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।118।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवदशाधिक शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।119।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
विंशतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।120।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक विंशतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।121।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वाविंशतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।122।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयोविंशतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।123।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्विंशतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।124।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चविंशतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।125।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षड्विंशतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।126।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तविंशतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।127।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टविंशतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।128।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवविंशतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।129।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।130।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक त्रिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।131।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयत्रिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।132।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयत्रिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।133।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुस्त्रिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।134।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चत्रिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।135।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्त्रिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।136।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तत्रिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।137।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टत्रिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।138।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवत्रिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।139।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चत्त्वारिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।140।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक चत्त्वारिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।141।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विचत्त्वारिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।142।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिचत्त्वारिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।143।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुश्चत्त्वारिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।144।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चचत्त्वारिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।145।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्चत्त्वारिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।146।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तचत्त्वारिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।147।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टचत्त्वारिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।148।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवचत्त्वारिंशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।149।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चाशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।150।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकपञ्चाशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।151।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विपञ्चाशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।152।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिपञ्चाशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।153।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुःपञ्चाशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।154।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चपञ्चाशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।155।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्पञ्चाशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।156।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तपञ्चाशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।157।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टपञ्चाशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।158।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवपञ्चाशतधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।159।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षष्टिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।160।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकषष्टिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।161।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विषष्टिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।162।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिषष्टिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।163।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुःषष्टिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।164।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चषष्टिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।165।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्षष्टिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।166।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तषष्टिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।167।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टषष्टिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।168।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवषष्टिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।169।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ततिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।170।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकसप्ततिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।171।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विसप्ततिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।172।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिसप्ततिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।173।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुःसप्ततिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।174।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचसप्ततिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।175।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्सप्ततिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।176।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तसप्ततिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।177।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टसप्ततिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।178।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवसप्ततिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।179।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अशीतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।180।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाशीतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।181।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयशीतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।182।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्र्यशीतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।183।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरशीतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।184।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चाशीतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।185।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षडाशीतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।186।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताशीतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।187।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाशीतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।188।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाशीतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।189।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।190।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकनवतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।191।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विनवतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।192।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिनवतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।193।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्नवतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।194।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चनवतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।195।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षण्णवतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।196।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तनवतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।197।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टनवतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।198।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवनवतिरधिकशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।199।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।200।।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ॥2॥

ॐ ह्रीं द्वितियशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय शतकः

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥201॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥202॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥203॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥204॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥205॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षडाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥206॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥207॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥208॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥209॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
दशाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥210॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकादशाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥211॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वादशाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥212॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयोदशाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥213॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चर्तुदशाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥214॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचदशाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥215॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षोडशाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥216॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तदशाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥217॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टादशाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥218॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवदशाधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥219॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
विंशतिः अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥220॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक विंशति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥221॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि विंशति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥222॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रय विंशति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥223॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्विंशति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥224॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचविंशति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥225॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षड्विंशति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥226॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त विंशति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥227॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट विंशति अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।228।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव विंशति अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।229।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।230।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक त्रिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।231।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि त्रिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।232।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयस्त्रिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।233।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुस्त्रिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।234।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचत्रिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।235।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्त्रिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।236।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त त्रिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।237।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट त्रिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।238।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव त्रिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।239।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चत्त्वारिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।240।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक चत्त्वारिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।241।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि चत्त्वारिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।242।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रय चत्त्वारिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।243।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुस्चत्त्वारिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।244।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच चत्त्वारिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।245।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् चत्त्वारिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।246।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त चत्त्वारिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।247।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट चत्त्वारिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।248।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव चत्त्वारिंशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।249।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।250।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक पंचाशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।251।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि पंचाशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।252।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि पंचाशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।253।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: पंचाशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।254।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच पंचाशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।255।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् पंचाशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।256।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त पंचाशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।257।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट पंचाशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।258।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव पंचाशत् अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।259।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षष्टि: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।260।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक षष्टि: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।261।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि षष्टि: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।262।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि षष्टि: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।263।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: षष्टि: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।264।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच षष्टि: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।265।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् षष्टि: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।266।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त षष्टि: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।267।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट षष्टि: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।268।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवषष्टि: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।269।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।270।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक सप्तति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।271।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि सप्तति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।272।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि सप्तति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।273।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: सप्तति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।274।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच सप्तति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।275।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् सप्तति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।276।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त सप्तति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।277।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट सप्तति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।278।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव सप्तति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।279।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अशीति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।280।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाशीति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।281।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयशीति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।282।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्र्यशीति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।283।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरशीति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।284।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाशीति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।285।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षडशीति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।286।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताशीति: अधिक द्विशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।287।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाशीतिः अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।288।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाशीतिः अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।289।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।290।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकनवति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।291।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि नवति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।292।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि नवति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।293।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चर्तुनवति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।294।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचनवति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।295।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् नवति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।296।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त नवति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।297।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट नवति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।298।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव नवति अधिक द्विशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।299।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।300।।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ।।3।।

ॐ ह्रीं तृतियशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति

चतुः शतकः

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।301।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।302।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्र्यधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।303।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्धिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।304।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।305।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षडधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।306।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।307।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।308।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।309।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
दशाधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।310।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकादशाधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।311।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वादशाधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।312।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयोदशाधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।313।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चर्तुदशाधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।314।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचदशाधिक त्रिशततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।315।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षोडशाधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।316।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त दशाधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।317।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट दशाधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।318।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव दशाधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।319।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
विंशति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।320।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक विंशति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।321।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विविंशति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।322।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिविंशति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।323।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्विंशति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।324।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचविंशति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।325।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् विंशति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।326।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त विंशति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।327।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट विंशति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।328।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव विंशति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।329।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।330।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक त्रिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।331।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वा त्रिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।332।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयस्त्रिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।333।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुस्त्रिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।334।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचत्रिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।335।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् त्रिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।336।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त त्रिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।337।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट त्रिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।338।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव त्रिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।339।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चत्त्वारिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।340।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक चत्त्वारिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।341।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि चत्त्वारिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।342।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि चत्त्वारिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।343।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्चत्त्वारिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।344।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचचत्त्वारिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।345।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्चत्त्वारिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।346।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त चत्त्वारिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।347।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट चत्त्वारिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।348।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव चत्त्वारिंशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।349।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।350।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक पंचाशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।351।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि पंचाशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।352।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि पंचाशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।353।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: पंचाशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।354।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच पंचाशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।355।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् पंचाशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।356।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त पंचाशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।357।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट पंचाशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।358।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव पंचाशत् अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।359।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षष्टि: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।360।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक षष्टि: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।361।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि षष्टि: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।362।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि षष्टि: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।363।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: षष्टि: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।364।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच षष्टि: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।365।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् षष्टि: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।366।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त षष्टि: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।367।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट षष्टि: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।368।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव षष्टि: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।369।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।370।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक सप्तति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।371।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि सप्तति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।372।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिसप्तति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।373।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु:सप्तति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।374।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच सप्तति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।375।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्सप्तति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।376।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त सप्तति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।377।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टसप्तति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।378।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव सप्तति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।379।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अशीति अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।380।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाशीति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।381।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयशीति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।381।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयशीति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।383।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरशीति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।384।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाशीति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।385।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षटशीति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।386।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताशीति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।387।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाशीति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।388।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाशीति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।389।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।390।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक नवति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।391।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि नवति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।392।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि नवति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।393।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चर्तु नवति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।394।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच नवति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।395।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षण्णवति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।396।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त नवति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।397।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट नवति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।398।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव नवति: अधिक त्रिशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।399।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।400।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्थशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति

पञ्च शतक:

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।401।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।402।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्र्यधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।403।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।404।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।405।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षडाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।406।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।407।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।408।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।409।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
दशाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।410।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एका दशाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।411।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वादशाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।412।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयो दशाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।413।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्दशाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।414।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचदशाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।415।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षोडशाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।416।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त दशाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।417।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट दशाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।418।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव दशाधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।419।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
विंशति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।420।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक विंशति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।521।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विविंशति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।422।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिविंशति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।423।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्विंशति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।424।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचविंशति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।425।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् विंशति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।426।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त विंशति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।427।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट विंशति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।428।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव विंशति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।429।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।430।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक त्रिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।431।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वित्रिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।432।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयस्त्रिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।433।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुस्त्रिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।434।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचत्रिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।435।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् त्रिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।436।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त त्रिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।437।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट त्रिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।438।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव त्रिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।439।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चत्त्वारिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।440।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक चत्त्वारिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।441।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि चत्त्वारिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।442।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि चत्त्वारिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।443।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्चत्त्वारिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।444।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचचत्त्वारिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।445।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्चत्त्वारिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।446।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त चत्त्वारिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।447।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट चत्त्वारिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।448।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव चत्त्वारिंशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।449।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।450।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक पंचाशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।451।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि पंचाशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।452।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि पंचाशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।453।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: पंचाशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।454।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच पंचाशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।455।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् पंचाशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।456।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त पंचाशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।457।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट पंचाशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।458।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव पंचाशत् अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।459।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षष्टि: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।460।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक षष्टि: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।461।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि षष्टि: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।462।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि षष्टि: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।463।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: षष्टि: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।464।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच षष्टि: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।465।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् षष्टि: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।466।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त षष्टि: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।467।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट षष्टि: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।468।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव षष्टि: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।469।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।470।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक सप्तति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।471।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि सप्तति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।472।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिसप्तति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।473।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु:सप्तति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।474।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच सप्तति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।475।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्सप्तति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।476।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त सप्तति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।477।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टसप्तति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।478।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव सप्तति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।479।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अशीति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।480।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाशीति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।481।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयशीति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।481।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयशीति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।483।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्शीति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।484।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाशीति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।485।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षटशीति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।486।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताशीति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।487।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाशीति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।488।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाशीति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।489।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।490।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक नवति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।491।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि नवति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।492।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि नवति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।493।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्नवति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।494।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच नवति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।495।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षड्नवति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।496।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त नवति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।497।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट नवति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।498।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव नवति: अधिक चतु:शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।499।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।500।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ।।5।।

ॐ ह्रीं पंचशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति

षष्ठम शतक:

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।501।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।502।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्र्यधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।503।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।504।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।505।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षडाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।506।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।507।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।508।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।509।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
दशाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।510।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एका दशाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।511।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वादशाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।512।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयो दशाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।513।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्दशाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।514।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचदशाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।515।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षोडशाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।516।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त दशाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।517।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट दशाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।518।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव दशाधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।519।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
विंशति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।520।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक विंशति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।521।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्विविंशति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।522।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिविंशति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।523।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्विंशति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।524।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचविंशति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।525।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् विंशति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।526।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त विंशति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।527।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट विंशति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।528।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव विंशति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।529।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।530।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक त्रिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।531।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि त्रिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।532।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयस्त्रिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।533।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुस्त्रिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।534।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचत्रिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।535।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् त्रिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।536।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त त्रिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।537।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट त्रिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।538।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव त्रिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।539।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चत्त्वारिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।540।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक चत्त्वारिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।541।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि चत्त्वारिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।542।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि चत्त्वारिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।543।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्चत्त्वारिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।544।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचचत्त्वारिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।545।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्चत्त्वारिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।546।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त चत्त्वारिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।547।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट चत्त्वारिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।548।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव चत्त्वारिंशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।549।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।550।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक पंचाशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।551।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि पंचाशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।552।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि पंचाशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।553।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: पंचाशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।554।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच पंचाशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।555।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् पंचाशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।556।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त पंचाशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।557।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट पंचाशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।558।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव पंचाशत् अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।559।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षष्टि: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।560।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक षष्टि: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।561।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि षष्टि: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।562।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि षष्टि: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।563।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: षष्टि: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।564।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच षष्टि: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।565।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् षष्टि: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।566।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त षष्टि: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।567।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट षष्टि: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।568।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव षष्टि: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।569।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।570।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक सप्तति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।571।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि सप्तति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।572।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिसप्तति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।573।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्सप्तति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।574।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच सप्तति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।575।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्सप्तति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।576।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त सप्तति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।577।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टसप्तति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।578।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव सप्तति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।579।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अशीति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।580।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाशीति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।581।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयशीति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।581।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयशीति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।583।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरशीति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।584।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाशीति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।585।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षटशीति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।586।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताशीति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।587।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाशीति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।588।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाशीति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।589।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।590।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक नवति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।591।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि नवति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।592।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि नवति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।593।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्नवति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।594।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच नवति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।595।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्नवति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।596।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त नवति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।597।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट नवति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।598।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव नवति: अधिक पञ्चशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।599।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्शततम: अधिक मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।600।।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ।।6।।

ॐ ह्रीं षष्टशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति

सप्त शतक:

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।601।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयाधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।602।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयाधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।603।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।604।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।605।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षटधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।606।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।607।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।608।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।609।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
दशाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।610।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक दशाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।611।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वादशाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।612।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयो दशाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।613।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्दशाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।614।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचदशाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।615।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षोडशाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।616।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त दशाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।617।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट दशाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।618।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव दशाधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।619।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
विंशतिः अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।620।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक विंशतिः अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।621।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि विंशतिः अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।622।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि विंशतिः अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।623।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्विंशतिः अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।624।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचविंशतिः अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।625।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् विंशतिः अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।626।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त विंशतिः अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।627।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट विंशतिः अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।628।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव विंशतिः अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।629।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिंशत् अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।630।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक त्रिंशत् अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।631।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि त्रिंशत् अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।632।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयस्त्रिंशत् अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।633।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुस्त्रिंशत् अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।634।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचत्रिंशत् अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।635।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् त्रिंशत् अधिक षट्शततमः मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।636।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त त्रिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।637।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट त्रिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।638।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव त्रिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।639।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चत्त्वारिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।640।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक चत्त्वारिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।641।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि चत्त्वारिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।642।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि चत्त्वारिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।643।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्चत्त्वारिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।644।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचचत्त्वारिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।645।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्चत्त्वारिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।646।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त चत्त्वारिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।647।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट चत्त्वारिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।648।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव चत्त्वारिंशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।649।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।650।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक पंचाशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।651।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि पंचाशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।652।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि पंचाशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।653।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: पंचाशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।654।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच पंचाशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।655।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् पंचाशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।656।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त पंचाशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।657।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट पंचाशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।658।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव पंचाशत् अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।659।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षष्टि: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।660।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक षष्टि: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।661।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि षष्टि: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।662।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि षष्टि: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।663।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: षष्टि: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।664।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच षष्टि: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।666।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट् षष्टि: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।666।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त षष्टि: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।667।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट षष्टि: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।668।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव षष्टि: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।669।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।670।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक सप्तति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।671।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि सप्तति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।672।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रिसप्तति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।673।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतु: सप्तति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।674।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच सप्तति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।675।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षट्सप्तति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।676।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त सप्तति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।677।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टसप्तति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।678।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव सप्तति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।679।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अशीति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।680।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एकाशीति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।681।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वयशीति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।681।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रयशीति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।683।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुरशीति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।684।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंचाशीति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।685।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षटशीति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।686।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्ताशीति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।687।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्टाशीति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।688।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवाशीति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।689।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नवति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।690।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
एक नवति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।691।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
द्वि नवति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।692।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
त्रि नवति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।693।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
चतुर्नवति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।694।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
पंच नवति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।695।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
षण्णवति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।696।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्त नवति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।697।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
अष्ट नवति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।698।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
नव नवति: अधिक षट्शततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।699।।
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य संघस्थ
सप्तशततम: मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।700।।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ।।7।।

ॐ ह्रीं सप्तशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति

जाप्य–ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यदिक सप्तशत मुनिवरेभ्यो नम:

समुच्चय जयमाला

दोहा– वात्सल्य का पर्व यह, जग में मंगलकार।
गाते हैं जयमालिका, करके जय जयकार।।

(चौबोला छन्द)

उज्जयिनी के नृप श्री वर्मा, के मंत्री थे चार विशेष।
बलि, प्रहलाद, बृहस्पति, नमुचि, मिथ्यावादी रहे अशेष।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक थे बहुगुणवान।
दर्शन करके नृप श्री वर्मा, प्रमुदित मन में हुआ महान्।।
अशुभ निमित्त जानकर गुरु ने, मौन का दीन्हा था आदेश।
शिरोधार्य करके मुनियों ने, पालन कीन्हा जिसे विशेष।।
श्रुत सागर मुनि सुन न पाए, जो थे ज्ञानी श्रेष्ठ महान्।
चर्या करके लौट रहे थे, मंत्री करते तब अपमान।।
अज्ञानी होते मुनि सारे, जानें क्या तत्त्वों का सार।
सुनकर मुनि मंत्री से बोले, तुम क्यों करते गलत प्रचार।।

वाद-विवाद हुआ मुनिवर से, सारे मंत्री माने हार।
अपमानित होकर रात्रि में, मुनि पर कीन्हे खड्गप्रहार।।
कीलित किया क्षेत्र रक्षक ने, सर्व मंत्रियों को उस हाल।
राजा ने क्रोधित हो करके, दीन्हा क्षण में देश निकाल।।
हस्तिनागपुर पहुँचे मंत्री, पद्मराय राजा के पास।
सर्व मंत्रियों ने मिलकर के, शत्रु दल का किया विनाश।।
तभी मंत्रियों को मुँह मांगा, राजा ने दीन्हा वरदान।
जब चाहेंगे ले लेंगे हम, वचन लिए राजा ने मान।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, करके पहुँचे वहाँ विहार।
संघ देख मंत्रिन् के मन में, भय का रहा न कोई पार।।
कुटिल भाव से मंत्री पहुँचे, पद्मराय नृप के दरबार।
अष्ट दिवस का राज्य दीजिए, मानेंगे हम सब आभार।।
भीषण आग जलाए मंत्री, यज्ञ रचाए विविध प्रकार।
दान किमिच्छित देते सबको, कीन्हा चारों ओर प्रचार।।
धरणी भूषण पर्वत पर मुनि, श्रुतसागर करते थे ध्यान।
कम्पित देख गगन में तारा, मुनि को आश्चर्य हुआ महान्।।
मुनियों पर उपसर्ग हुआ है, मुनि को हुआ था ये आभास।।
श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धि मुनिवर, तप से सिद्ध हुई है खास।
यह उपसर्ग आपके द्वारा, हो सकता है पूर्ण विनाश।।
हस्तिनागपुर पहुँचे मुनिवर, वात्सल्य का भाव विचार।
बटुक विप्र का भेष धारकर, मुनि पहुँचे करने उपकार।।
बलि आदि मंत्री के आगे, बटुक ने माँगा यह वरदान।
तीन पैढ़ भूमि दो हमको, तुम हो दानी श्रेष्ठ महान्।।
वचन बद्ध करके मंत्री को, मुनिवर ने फिर रक्खा पैर।
दो पग में सब धरती मापी, तीजे की अब रही न खैर।।
बलि आदि मंत्री झुक जाते, मुनिवर के चरणों में आन।
हमें क्षमा कर दो हे मुनिवर, हमसे गलति हुई महान्।।
विष्णु कुमार मुनि की बोले, प्राणी सारे जय-जयकार।
करके यह उपसर्ग दूर गुरु, कीन्हा है हम पर उपकार।।
नशते ही उपसर्ग सभी ने, मुनियों को दीन्हा आहार।
बलि आदि भी मुनि संघ की, भाव सहित बोले जयकार।।

रक्षासूत्र बाँध हाथों में, सबने कीन्हा यही विचार।
धर्म की रक्षा कर हमको भी, करना है जग का उपकार।।
साधर्मी से वात्सल्य का, भाव जगायेंगे हम लोग।
कहीं किसी भी रूप में हमको, मिले धर्म का जब संयोग।।
श्रावण शुक्ला पूनम का दिन, पर्व बना यह मंगलकार।
वात्सल्य का है प्रतीक जो, सम्यक् दर्शन का आधार।।
विष्णु कुमार मुनि ने फिर से, व्रत कीन्हें थे अंगीकार।।
कर्मों की सेना के ऊपर, कीन्हा मुनिवर ने अधिकार।।
मुनियों ने कीन्हा तप भारी, निज परिणामों के अनुसार।
कर्म नाशकर कर स्वर्ग मोक्ष पद, पाये मुनिवर अपरम्पार।।
धर्म भावना जगे हृदय में, पाप रहे हमसे अतिदूर।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, से हृदय भरे मेरा भरपूर।।
रक्षा बन्धन पर्व धर्म की, रक्षा का त्यौहार महान्।
'विशद' भाव से करते हैं हम, मुनियों का अतिशय गुणगान।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक के चरण नमन्।
हैं उपसर्ग निवारक महामुनि, विष्णु कुमार के पद वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनिभ्या जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– वात्सल्य का पर्व यह, रक्षाबन्धन नाम।
जिन मुनियों के चरण में, बारम्बार प्रणाम।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्तान्तर्ग श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा अलवर मासोत्तम मासे शुभे मासे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे एकम रविवासरे श्री रक्षाबन्धन विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

रक्षाबन्धन विधान की आरती

तर्ज– भक्ती बेकरार है...

गुरुवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
मुनि अकम्पनाचार्य आदि की, हो रही जय जयकार है।।टेक।।

घृत का दीप जलाकर लाए, श्री मुनिवर के द्वार जी-2
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी-2
गुरुवर का.....।।1।।

श्री अकम्पनाचार्य आदि शुभ, सप्त शतक मुनिवर ज्ञानी-2
धर्म साधना करने वाले, पावन थे जो कल्याणी-2
गुरुवर का.....।।2।।

नगर हस्तिनापुर में जाके, पावन ध्यान लगाए थे-2
बलि आदिक मंत्री मुनियों से, मन में वैर बनाए थे-2
गुरुवर का.....।।3।।

जिनके ऊपर मंत्री छल से, बहु उपसर्ग कराए थे-2
विष्णु कुमार मुनी ऋद्धी से, वह उपसर्ग नशाए थे-2
गुरुवर का.....।।4।।

तब से चैत शुक्ल पूनम को, यह त्यौहार मनाते हैं-2
रक्षासूत्र बाँध के कर में, वात्सल्य दिखलाते हैं-2
गुरुवर का.....।।5।।

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युंजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग–3
139. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग–1
143. चिंतवन सरोवर भाग–2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग–1
148. मूक उपदेश भाग–2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्याभव करें।